भारतीय जनसंचार संस्थान

विगत जानकारी

सूचना प्रचार और विकास के क्षेत्र में संचार सुविधाओं के सर्वोत्तम उपयोग को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने १९६२-६३ में फोर्ड फाउंडेशन/यूनेस्को दल के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्यातिप्राप्त जनसंचार विशेषज्ञों से सलाह ली, जिन्होंने जनसंचार के क्षेत्र में शिक्षण, प्रशिक्षण और अनुसंधान के लिए एक राष्ट्रीय संस्थान की स्थापना की सिफारिश की। परिणामस्वरूप, सन् १९६५ में भारतीय जनसंचार संस्थान शुरू हुआ।

स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी उस समय सूचना एवं प्रसारण मंत्री थी। उन्होंने १७ अगस्त, १९६५ को इस संस्थान का उद्‌घाटन किया। इसके बाद २२ जनवरी, १९६६ को इस संस्थान का प्रशासन आईआईएमसी सोसायटी को स्थानांतरित कर दिया गया, जिसका पंजीकरण सोसायटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट 'XXI' १८६० के तहत हुआ था। इसके बाद से यह संस्थान जनसंचार शिक्षण और अनुसंधान के क्षेत्र में उच्चतर अध्ययन के एक स्वायत्त केन्द्र के रूप में काम कर रहा है। यह भारत सरकार द्वारा सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के माध्यम से पूर्ण वित्त पोषित है।

इस संस्थान ने बहुत कम कर्मचारियों के साथ अपनी शुरूआत की थी जिसमें यूनेस्को के दो सलाहकार भी शामिल थे। शुरूआती वर्षों में संस्थान ने मुख्यतः केन्द्रीय सूचना सेवा के अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये और अनुसंधान अध्ययनों का संचालन किया। लेकिन १९६९ में भारतीय जनसंचार संस्थान ने विकासशील देशों के लिए पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम नामक एक बड़ा अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया। यह कार्यक्रम अफ्रीका और एशियाई देशों के मध्यम स्तर के पत्रकारों के लिए था। इसके अलावा संस्थान ने केन्द्र और राज्य सरकारों के साथ-साथ सार्वजनिक उपक्रमों की विभिन्न मीडिया/प्रचार ईकाइयों में कार्यरत संचार कर्मियों की प्रशिक्षण की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक सप्ताह से लेकर तीन महीने तक के विशेष संक्षिप्त पाठ्यक्रम भी शुरू किये।

समाचार संकलन के असंतुलन और गड़बड़ी को दूर करने की तीसरी दुनिया के गुट निरपेक्ष देशों की जरूरत को ध्यान में रखते हुए संस्थान ने १९७८ में गुट निरपेक्ष देशों की समाचार एजेंसियों के पत्रकारों के लिए आठ महीने का पाठ्यक्रम शुरू किया। इस पाठ्यक्रम की बढ़ती मांग, ज्यादा प्रतिभागियों को मौका देने एवं श्रमजीवी पत्रकारों को प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए लंबे समय तक छोडने में समाचार एजेंसियों की दिक्कतों को ध्यान में रखते हुए यह अवधि वर्ष १९८------ में आठ महीने से घटाकर पांच महीने कर दी गयी।

अब संस्थान एक वर्ष में पांच महीने के दो एजेंसी पत्रकारिता के पाठ्यक्रम आयोजित करता है। पाठ्यक्रम का नाम विकास संबंधी पत्रकारिता डिप्लोमा पाठ्यक्रम है जो गुट निरपेक्ष और अन्य विकासशील देशों के लिए है।

वर्ष १९८१ में विज्ञापन एवं जनसंपर्क में एक वर्ष के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम शुरू किया गया, ताकि जनसंचार

के क्षेत्र में इस बहुप्रतिक्षित जरूरत को पूरा किया जा सके।

वर्ष १९८१-८२ में संस्थान ने आकाशवाणी और दूरदर्शन के कर्मचारियों के लिए प्रसारण पत्रकारिता 'ब्राडकास्ट जर्नलिज्म' का पाठ्यक्रम शुरू किया।

संस्थान ने भाषाई पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्यरत या कार्य करने के इच्छुक लोगों के लिए प्रशिक्षण की बढती जरूरतों को पूरा करने के उद्देश्य से १९८७ में हिन्दी पत्रकारिता में एक वर्ष का पूर्णकालिक स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम शुरू किया।

पूर्वी राज्यों की बढती जरूरतों को पूरा करने के लिए संस्थान ने १९९----- में ढेंकनाल 'उड़ीसा' में अपनी एक शाखा खोली जहां स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित किया जा रहा है।

रेडियो और टेलीविजन पत्रकारिता में प्रशिक्षण सुविधाओं की बढती मांग को पूरा करने के लिए १९९७ में संस्थान ने रेडियो एवं टेलीविजन पत्रकारिता में पूर्णकालिक पाठ्यक्रम शुरू किया।